فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَا ﴿٤٢﴾

तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है[47] तुम से क़ियामत को पूछते हैं कि वोह कब के लिये ठहरी हुई है

فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾ اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾ اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرُ

तुम्हें उस के बयान से क्या तअ़ल्लुक़[48] तुम्हारे रब ही तक उस की इन्तिहा है तुम तो फ़क़त़ उसे डराने वाले हो

مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿٤٦﴾

जो उस से डरे गोया जिस दिन वोह उसे देखेंगे[49] दुन्या में न रहे थे मगर एक शाम या उस के दिन चढ़े

اٰياتها ٤٢ | ٨٠ سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ ٢٤ | ركوعها ١

सूरए अ़बस मक्किय्या है, इस में बियालीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह़रबान रह़्म वाला[1]

عَبَسَ وَتَوَلّٰىۤ ﴿١﴾ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿٢﴾ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىۤ ﴿٣﴾

तेवरी चढ़ाई और मुंह फेरा[2] इस पर कि उस के पास वोह नाबीना ह़ाज़िर हुवा[3] और तुम्हें क्या मा'लूम शायद वोह सुथरा हो[4]

اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ﴿٤﴾ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ﴿٥﴾ فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ﴿٦﴾

या नसीह़त ले तो उसे नसीह़त फ़ाएदा दे वोह जो बे परवाह बनता है[5] तुम उस के तो पीछे पड़ते हो[6]

وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ﴿٨﴾ وَهُوَ يَخْشٰى ﴿٩﴾

और तुम्हारा कुछ ज़ियां नहीं इस में कि वोह सुथरा न हो[7] और वोह जो तुम्हारे हुज़ूर मलक्ता (नाज़ से दौड़ता हुवा) आया[8] और वोह डर रहा है[9]

47 : ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! मक्का के काफ़िर 48 : और उस का वक़्त बताने से क्या ग़रज़ 49 : या'नी काफ़िर क़ियामत को जिस का इन्कार करते हैं तो उस के होल व दह्शत से अपनी ज़िन्दगानी की मुद्दत भूल जाएंगे और ख़याल करेंगे कि 1 : "सूरए अ़बस" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, बियालीस आयतें, एक सो तीस कलिमे, पांच सो तेंतीस ह़र्फ़ हैं। 2 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने 3 : या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम। **शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उ़त्बा बिन रबीआ़, अबू जह्ल बिन हिशाम और अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब और उबय बिन ख़लफ़ और उमय्या बिन ख़लफ़ अशराफ़े क़ुरैश को इस्लाम की दा'वत फ़रमा रहे थे, इस दरमियान में अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम नाबीना ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बार बार निदा कर के अ़र्ज़ किया कि जो **अल्लाह** तआ़ला ने आप को सिखाया है मुझे ता'लीम फ़रमाइये ! इब्ने उम्मे मक्तूम ने येह न समझा कि हुज़ूर दूसरों से गुफ़्तगू फ़रमा रहे हैं, इस से क़त़्ए कलाम होगा। येह बात हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को गिरां गुज़री और आसारे ना गवारी चेह्रए अक़्दस पर नुमायां हुए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अपनी दौलत सराए अक़्दस की त़रफ़ वापस हुए। इस पर येह आयात नाज़िल हुईं। और "नाबीना" फ़रमाने में अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम की मा'ज़ूरी की त़रफ़ इशारा है कि क़त़्ए कलाम उन से इस वज्ह से वाक़ेअ़ हुवा। इस आयत के नुज़ूल के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम का इकराम फ़रमाते थे। 4 : गुनाहों से। आप का इर्शाद सुन कर 5 : **अल्लाह** तआ़ला से और ईमान लाने से ब सबब अपने माल के 6 : और उस के ईमान लाने की त़मअ़ में उस के दरपै होते हो। 7 : ईमान ला कर और हिदायत पा कर, क्यूं कि आप के ज़िम्मे दा'वत देना और पयामे इलाही पहुंचा देना है। 8 : या'नी इब्ने उम्मे मक्तूम 9 : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से।

www.dawateislami.net

وقف لازم

فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ﴿١٠﴾ كَلَّاۤ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿١٢﴾ فِيْ

तो उसे छोड़ कर और त़रफ़ मश्ग़ूल होते हो यूं नहीं[10] येह तो समझाना है[11] तो जो चाहे उसे याद करे[12] उन

صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾ بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾ كِرَامٍۭ

सह़ीफ़ों में कि इ़ज़्ज़त वाले हैं[13] बुलन्दी वाले[14] पाकी वाले[15] ऐसों के हाथ लिखे हुए जो करम वाले

بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾ قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَاۤ اَكْفَرَهٗ ﴿١٧﴾ مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ﴿١٨﴾ مِنْ

निकोई वाले[16] आदमी मारा जाइयो क्या नाशुक्र है[17] उसे काहे से बनाया पानी की

نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ اَمَاتَهٗ

बूंद से उसे पैदा फ़रमाया फिर उसे त़रह़ त़रह़ के अन्दाज़ों पर रखा[18] फिर उसे रास्ता आसान किया[19] फिर उसे मौत दी

فَاَقْبَرَهٗ ﴿٢١﴾ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَاۤ اَمَرَهٗ ﴿٢٣﴾ فَلْيَنْظُرِ

फिर क़ब्र में रखवाया[20] फिर जब चाहा उसे बाहर निकाला[21] कोई नहीं उस ने अब तक पूरा न किया जो उसे हुक्म हुवा था[22] तो आदमी

الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖۤ ﴿٢٤﴾ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ

को चाहिये अपने खानों को देखे[23] कि हम ने अच्छी त़रह़ पानी डाला[24] फिर ज़मीन को ख़ूब

شَقًّا ﴿٢٦﴾ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾ وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ﴿٢٨﴾ وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَّ

चीरा तो उस में उगाया अनाज और अंगूर और चारा और ज़ैतून और खजूर और

حَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ﴿٣١﴾ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾ فَاِذَا

घने बाग़ीचे और मेवे और दूब (घास) तुम्हारे फ़ाएदे को और तुम्हारे चौपायों के फिर जब

جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ﴿٣٤﴾ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ﴿٣٥﴾

आएगी वोह कान फाड़ने वाली चिंघाड़[25] उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई और मां और बाप

10 : ऐसा न कीजिये **11 :** या'नी आयाते क़ुरआन मख़्लूक़ के लिये नसीह़त हैं। **12 :** और उस से पन्द पज़ीर हो। **13 :** अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक **14 :** रफ़ीउ़ल क़द्र **15 :** कि उन्हें पाकों के सिवा कोई न छूए **16 :** अल्लाह तआ़ला के फ़रमां बरदार और वोह फ़िरिश्ते हैं जो इस को लौह़े महफ़ूज़ से नक़्ल करते हैं। **17 :** कि अल्लाह तआ़ला की कसीर ने'मतों और बे निहायत एह़सानों के बा वुजूद कुफ़्र करता है। **18 :** कभी नुत़्फ़ा की शक्ल में, कभी अ़लक़ा की सूरत में, कभी मुज़्ग़ा की शान में तक्मीले आफ़रीनिश तक। **19 :** मां के पेट से बरआमद होने का। **20 :** कि बा'दे मौत बे इ़ज़्ज़त न हो। **21 :** या'नी बा'दे मौत ह़िसाब व जज़ा के लिये, फिर उस के वासिते ज़िन्दगानी मुक़र्रर की। **22 :** उस के रब का या'नी काफ़िर ईमान ला कर हुक्मे इलाही को बजा न लाया। **23 :** जिन्हें ख़ाता है और जो उस की ह़यात का सबब हैं कि उन में उस के रब की क़ुदरत ज़ाहिर है, किस त़रह़ जुज़्वे बदन होते हैं और किस निज़ामे अ़जीब से काम में आते हैं और किस त़रह़ रब عَزَّوَجَلَّ अ़त़ा फ़रमाता है। इन ह़िक्मतों का बयान फ़रमाया जाता है **: 24 :** बादल से **25 :** या'नी क़ियामत के नफ़्ख़ए सानिया की होलनाक आवाज़ जो मख़्लूक़ को बहरा कर देगी।

www.dawateislami.net

وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿٣٧﴾

और जोरू (बीवी) और बेटों से[26] इन में से हर एक को उस दिन एक फ़िक्र है कि वोही उसे बस है[27]

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ

कितने मुंह उस दिन रोशन होंगे[28] हंसते खुशियां मनाते[29] और कितने मूंहों पर उस दिन

عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

गर्द पड़ी होगी उन पर सियाही चढ़ रही है[30] येह वोही हैं काफ़िर बदकार

ايَاتُهَا ٢٩ | ٨١ سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ مَكِّيَّةٌ ٧ | رُكُوْعُهَا ١

सूरए तक्वीर मक्किय्या है, इस में उन्तीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ

जब धूप लपेटी जाए[2] और जब तारे झड़ पड़ें[3] और जब पहाड़

سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ﴿٥﴾ وَ

चलाए जाएं[4] और जब थलकी (गाभन) ऊंटनियां[5] छूटी फिरें[6] और जब वह़्शी जानवर जम्अ़ किये जाएं[7] और

اِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾ وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ

जब समुन्दर सुलगाए जाएं[8] और जब जानों के जोड़ बनें[9] और जब ज़िन्दा दबाई हुई से

26 : इन में से किसी की त़रफ़ मुल्तफ़ित (मुतवज्जेह) न होगा अपनी ही पड़ी होगी। **27 :** क़ियामत का ह़ाल और उस के अहवाल बयान फ़रमाने के बा'द मुकल्लफ़ीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि वोह दो क़िस्म हैं सईद और शक़ी, जो सईद हैं उन का ह़ाल इर्शाद होता है : **28 :** नूरे ईमान से या शब की इबादतों से या वुज़ू के आसार से **29 : अल्लाह** तआ़ला के ने'मत व करम और उस की रिज़ा पर। इस के बा'द अश्क़िया का ह़ाल बयान फ़रमाया जाता है : **30 :** ज़लील ह़ाल वह़्शत ज़दा सूरत। **1 :** "सूरए कुव्विरत" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्तीस आयतें, एक सो चार कलिमे, पांच सो तीस ह़र्फ़ हैं। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिसे पसन्द हो कि रोज़े क़ियामत को ऐसा देखे गोया कि वोह नज़र के सामने है तो चाहिये कि सूरए "اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ" और सूरए "اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ" और सूरए اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ पढ़े। (ترمذی) **2 :** या'नी आफ़्ताब का नूर ज़ाइल हो जाए **3 :** बारिश की त़रह़ आस्मान से ज़मीन पर गिर पड़ें और कोई तारा अपनी जगह बाक़ी न रहे **4 :** और गुबार की त़रह़ हवा में उड़ते फिरें **5 :** जिन के ह़म्ल को दस महीने गुज़र चुके हों और बियाहने का वक़्त क़रीब आ गया हो **6 :** न उन का कोई चराने वाला हो न निगरान, उस रोज़ की दहशत का येह आ़लम हो, और लोग अपने ह़ाल में ऐसे मुब्तला हों कि उन की परवाह करने वाला कोई न हो। **7 :** रोज़े क़ियामत बा'दे बअ़्स कि एक दूसरे से बदला लें, फिर ख़ाक कर दिये जाएं। **8 :** फिर वोह ख़ाक हो जाएं **9 :** इस त़रह़ कि नेक नेकों के साथ हों और बद बदों के साथ या येह मा'ना कि जानें अपने जिस्मों से मिला दी जाएं या येह कि अपने अ़मलों से मिला दी जाएं या येह कि ईमानदारों की जानें ह़ूरों के और काफ़िरों की जानें शयात़ीन के साथ मिला दी जाएं।

www.dawateislami.net